03/02/22 Part I Paper II

Q भारतीय जाति प्रथा में होने वाले परिवर्तन की व्याख्या करें।
Explain the change in caste system.

Ans जाति व्यवस्था में सदा से कुछ-न-कुछ परिवर्तन होते रहे हैं। वैदिक काल में जाति शब्द का प्रयोग नहीं था, उसकी जगह पर वर्ण शब्द का प्रयोग होता था। इस प्रकार जाति व्यवस्था की जगह पर वर्ण व्यवस्था थी। सम्पूर्ण समाज चार वर्णों में विभक्त था। पहला ब्राह्मण दूसरा क्षत्रिय, तीसरा वैश्य तथा चौथा शूद्र। अनुमानतः तीसरी शताब्दी में वर्ण व्यवस्था की जगह पर जाति व्यवस्था का आरम्भ हुआ। जाति के नियम कठोर होने लगे और कई उपजातियों का जन्म हुआ। मध्यकालीन युग में जातियों का विरोध बढ़ता गया। 19वीं शताब्दी में अनेक समाज सुधारकों ने जाति व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई। फलस्वरूप व्यवस्था की कठोरता में कमी आई। आधुनिक युग में जाति व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए हैं, जिसका वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है।

1. ब्राह्मणों की शक्ति में गिरावट - समाज में धर्म की प्रधानता रहने के कारण प्रारम्भ से ही ब्राह्मणों की शक्ति में काफी वृद्धि हुई। समाज में उन्हें सबसे उच्च स्थान प्राप्त था। परन्तु आधुनिक युग में शिक्षा का प्रसार तेजी से हो रहा है। धर्म का अन्धविश्वास एवं

कमजोर पड़ने के कारण ब्राह्मणों की शक्ति में काफी गिरावट आ गयी है। आधुनिक युग में आर्थिक दृष्टि से लोग एक-दूसरे से काफी स्वतंत्र होते जा रहे हैं। अतः उन्हें परम्परागत आदर्शों को मानने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। आधुनिक युग में जन्म से अधिक कर्म को महत्व दिया जा रहा है अतः ब्राह्मणों की स्थिति में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

(2) अस्पृश्यता का अन्त - अस्पृश्यता का अन्त जाति व्यवस्था में परिवर्तन की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। प्रारम्भ से ही अछूतों को हीन माना जाता रहा है परन्तु आधुनिक युग में छुआछूत का अन्त कर दिया गया है। संविधान के अनुच्छेद 17 में ही इसकी घोषणा कर दी गयी है। प्रत्येक क्षेत्र में हरिजनों की उन्नति के लिए तरह-तरह के कदम उठाये गये हैं। उनके लिए सभी क्षेत्र में आरक्षण का प्रावधान किया गया है। इससे जाति व्यवस्था के आधार में ही परिवर्तन हो गया है।

(3) व्यावसायिक गतिशीलता - पहले जाति के आधार पर व्यवसाय तय किये हुए थे। कुम्हार को बर्तन ही बनाना था। दूसरा काम नहीं करना था। परन्तु आधुनिक युग व्यावसायिक स्वतंत्रता का युग है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी जाति का हो अपनी

इच्छा के अनुसार कोई भी व्यवसाय अपना सकता है। इसका मुख्य कारण व्यवसायों की मांग में वृद्धि है। साथ ही जाति प्रथा के कठोर बन्धनों से लोग मुक्त होते जा रहे हैं। व्यावसायिक बन्धन से मुक्ति का सबसे अच्छा नमूना तो यह देखने को मिलता है कि आज शूद्र कहे जाने वाले व्यक्ति ब्राह्मणों के व्यवसाय में लगे हुए हैं और ब्राह्मण वर्ग शूद्र कम्पनी में जूता निर्माण के व्यवसाय में संलग्न है। इस प्रकार आधुनिक युग में जाति के अनुसार व्यवसाय-बन्धन से लोग मुक्त होकर सभी तरह के काम करने लगे हैं।

(4.) विवाह और खान-पान के नियमों का परिवर्तन - जाति व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि एक जाति के सदस्यों का विवाह उसी जाति में होता था तथा सामाजिक सम्बन्धों एवं खान-पान आदि में नियंत्रण था। आधुनिक युग में अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन शुरू हुआ है। यह प्रथा समाज की जड़ तक नहीं पहुँच पायी है, परन्तु इनका शुरू हो जाना ही जाति व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन माना जायेगा। खान-पान में परिवर्तन आज कल लोग सभी जाति के साथ सवारियों, होटलों, जलपान गृहों में एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। एक साथ यात्रा करते तथा कार्यालयों, शिक्षण संस्थाओं आदि में

एक साथ काम करने के कारण जाति पाति का भेदभाव मिटता जा रहा है।

(c) जन्म की महत्ता में कमी- आज जन्म सामाजिक स्थिति के निर्धारण का एक मात्र आधार नहीं रह गया है। पहले उच्च जाति में जन्मे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उच्च हो जाती थी। आज यह बात नहीं रही। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति निर्धारण गुण और कार्यकुशलता का आधिक महत्व हो गया है। यह जाति व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण बदलाव माना जायेगा।

स्पष्ट है कि आधुनिक युग में कठोर जाति व्यवस्था के स्वरूप का अंत हो गया है। जाति व्यवस्था के उन काल्पनिक आधारों को अस्वीकार कर दिया गया जिसके कारण जाति व्यवस्था दूषित हो गयी थी।